मध्य रेल

रेल सुरभि

मुख्यालय राजभाषा विभाग की त्रैमासिक गृह पत्रिका

संयुक्तांक - (39-40)

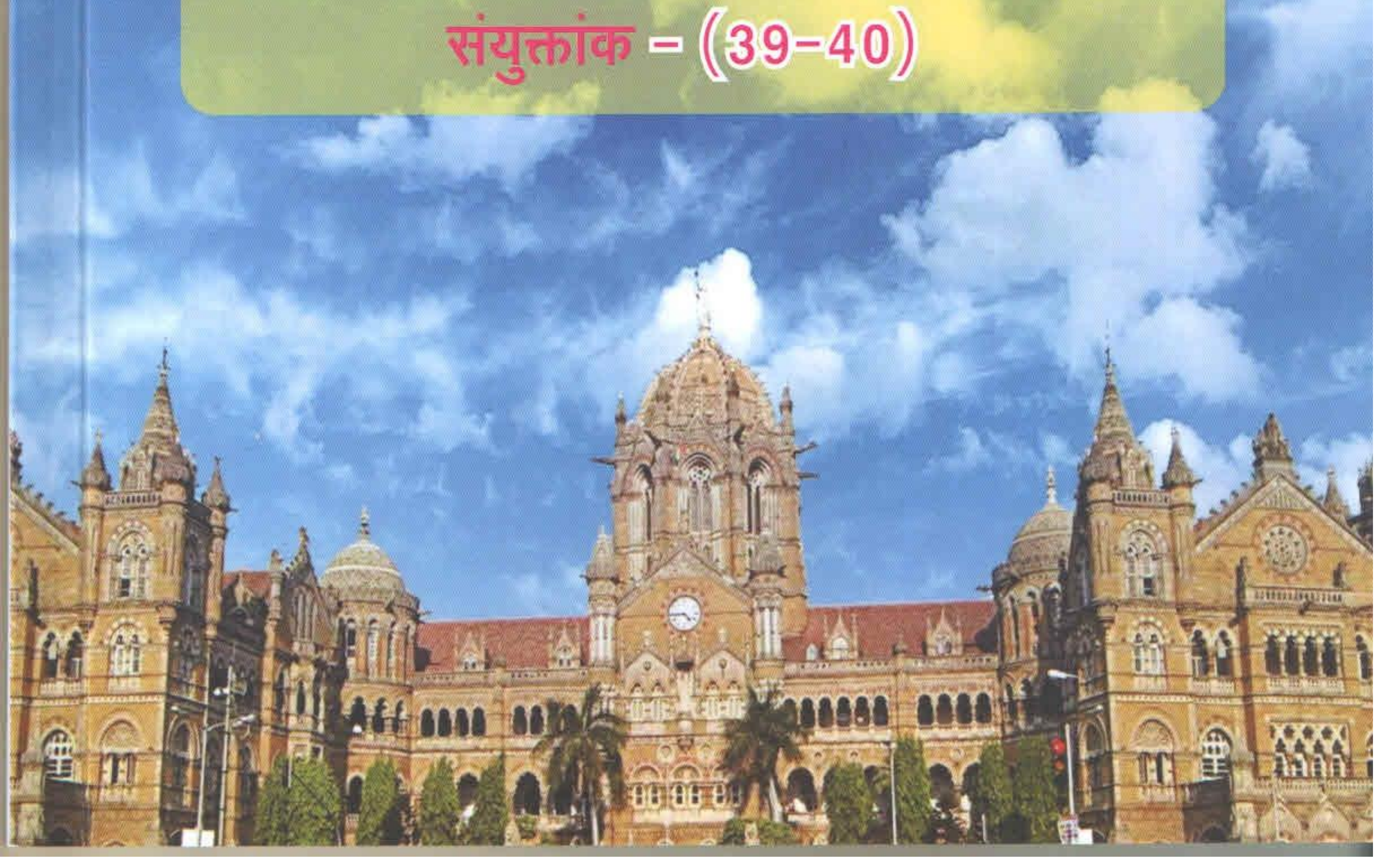

मुख्यालय राजभाषा विभाग द्वारा की गई

मुख्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 16.09.2024 से 30.09.2024 तक आयोजित हिंदी पखवाड़ा के दौरान वाक् प्रतियोगिता का आयोजन।

मुख्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा, 2024 के समापन अवसर पर प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर एवं पूर्व मुख्य राजभाषा अधिकारी के कर-कमलों से प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

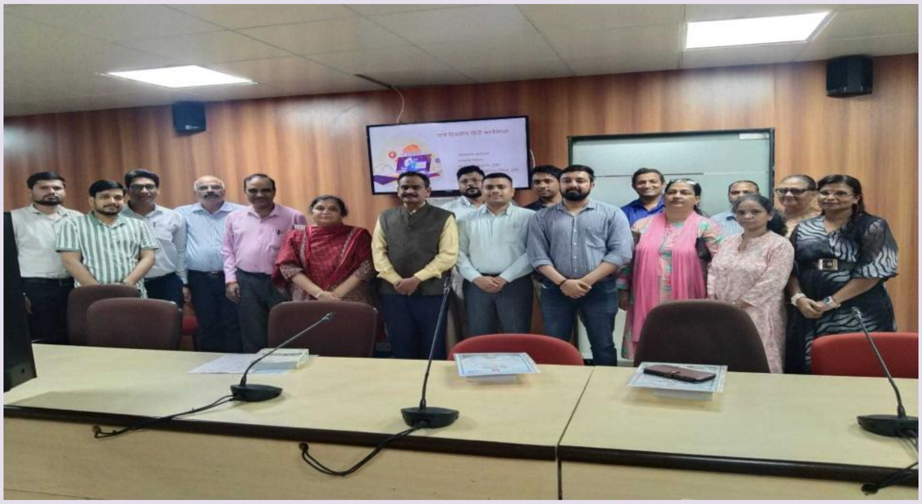

मुख्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 14.10.2024 से 18.10.2024 तक आयोजित पांच दिवसीय हिंदी कार्यशाला का समापन।

"रेल सुरभि"

अंक-39 एवं 40 (संयुक्तांक)

जुलाई-दिसंबर 2024

-: संरक्षक :-

धर्म वीर मीना

महाप्रबंधक

-:मार्गदर्शक:-

श्याम सुंदर गुप्ता

प्रधान मुख्य परिचालन प्रबंधक

तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी

-: संपादक :-

डॉ. विभावरी गोरे

उप महाप्रबंधक (राजभाषा), मध्य रेल

-: उप संपादक :-

दीपा मंदयान

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)

-: सहयोग :-

राकेश पांडे, कनिष्ठ अनुवादक

डॉ. वीरेंद्रसिंह राव, कनिष्ठ अनुवादक

संगीता मिश्रा, कार्यालय अधीक्षक

-: संपर्क का पता :-

महाप्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग

नया प्रशासनिक भवन, मध्य रेल, मुंबई छशिमट

फोन: 54753 / 54752/ 54754 (रेलवे)

022-22697123 (एमटीएनएल)

ई : मेल-dgmol12@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित सभी विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। उन्हें भारत सरकार या रेल मंत्रालय के विचार न समझा जाए ।

रचनाकार अपनी रचना की मौलिकता के लिए स्वयं जिम्मेदार है।

-: अनुक्रमणिका :-

क्र.	रचना का नाम	विधा	रचनाकार (सर्वश्री/श्रीमती)	पृष्ठ सं.
1	सबक	लघुकथा	सुधा मिश्रा द्विवेदी	05
2	भारत और दुनिया का सबसे बड़ा रेलवे मार्शलिंग यार्ड	लेख	विमलेश चंद्र	06
3	भ्रष्टाचार को ना कहें एवं राष्ट्र के प्रति वचनबद्ध हों	लेख	सुकान्त मिश्रा	11
4	विचारधारा	लेख	विवेक धुर्वे	13
5	दुविधा	कविता	जितेंद्र गोंड	13
6	डर.! ... उच्चतम सीमा तक !	लेख	विकास कुमार बघेल	14
7	प्रारब्ध	कविता	रामजी प्रसाद	20
8	जीवन का मंत्र	कविता	त्रिपुरारी कुमार	21
9	मैं संविधान हूँ	कविता	मुकेश कुमार	22
10	विकास की राह में हिंदी की भूमिका	निबंध	राम मूर्ति	23
11	नदियों का दर्द	कविता	कमलेश कुमार द्वीवेदी	26
12	सुलेखन	सुलेखन	डॉ. प्रवीण चोपड़ा	27
13	जब नन्हें शिशु की सांसें थम गई	लघुकथा	डॉ. प्रवीण चोपड़ा	30
	मराठी खंड			
14	बापाची दिवाळी !	कविता	अभिजीत बाबुराव रोहेकर	36

धर्म वीर मीना
महाप्रबंधक
Dharam Veer Meena
General Manager

सत्यमेव जयते

मध्य रेल,
छ. शि. म. ट. मुंबई - 400 001

Central Railway,
CSMT, Mumbai - 400 001

संदेश

मुख्यालय राजभाषा विभाग की गृह-पत्रिका **रेल सुरभि** का यह संयुक्तांक नवीन .कलेवर के साथ ई-प्रारूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका का स्वरूप ई-प्रारूप में होने से हमें अब विभिन्न क्षेत्रों से पत्रिका के लिए रचनाएं प्राप्त हो रही है। पत्रिका के ई-संस्करण को मध्य रेल की वेबसाइट पर नियमित रूप से अपलोड किया जाता है जिसके परिणामस्वरुप हमारी यह पत्रिका देशभर में कोने-कोने तक आसानी से पहुंच रही है।

मध्य रेल का अधिकांश कार्य क्षेत्र राजभाषा नियमानुसार 'ख' क्षेत्र में आता है। राज्य की राजभाषा मराठी होने से यहां का अधिकांश कार्य मराठी में किया जाना स्वाभाविक है, ऐसे में पत्रिका के अंतर्गत मराठी खंड को भी समाविष्ट किया जाना निश्चित रूप से प्रसंशनीय है और इससे बोर्ड के आदेशों का अनुपालन भी सुनिश्चित हो जाता है।

राजभाषा विभाग अनेक क्रियाकलापों के माध्यम से अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सदा प्रेरित करता रहता है। प्रचार-प्रसार के प्रयासों में पत्रिका का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इस पत्रिका में रेल कर्मियों तथा उनके परिजनों द्वारा भेजी गई रचनाओं को पढ़कर प्रतीत होता है कि हमारे कार्मिकों में कल्पनाशीलता और लेखन की असीमित प्रतिभा है। वे अपने विचारों को सार्थक शब्दों में सार्वजनिक मंच पर रखने में निपुण है। इसी तरह आप भी अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए इस अवसर का भरपूर लाभ उठाएं और रेल सुरभि के पाठकों के लिए प्रेरणा स्रोत बनें।

नव वर्ष की अग्रिम शुभकामनाओं के साथ।

(धर्म वीर मीना)
महाप्रबंधक

मध्य रेल
Central Railway
श्याम सुंदर गुप्ता भा.रे.या.से.९१
प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक
Shyam Sunder Gupta I.R.T.S 91
Principal Chief Operations Manager

सत्यमेव जयते
भारत सरकार / Govt. of India
रेल मंत्रालय/ Ministry of Railways

मध्य रेल
पहला माला, एनेक्स भवन,
छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई - 400 001.
Central Railway
1st Floor, Annexe Building,
Chhatrapati Shivaji Maharaj Terminus,
Mumbai - 400 001.
कार्यालय दूरभाष Office Telephone
मो. / Mob. : 8828110900
फोन / MTNL : 022-22620082
ई-मेल / E-mail : comcr022@gmail.com

मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश

मध्य रेल पर मुख्य राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका रेल सुरभि में प्रकाशित यह मेरा पहला संदेश है। यह प्रसन्नता की बात है कि विगत वर्षों से राजभाषा विभाग द्वारा रेल सुरभि का निरंतर और नियमित प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी पखवाड़े के अलावा समय-समय पर कार्यशालाएं, साहित्यकारों की जयंतियां, विभिन्न प्रतियोगिताएं, तकनीकी संगोष्ठियां आदि कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

हमारी पत्रिका रेल सुरभि के माध्यम से हम आपको रेलवे से जुड़ी जानकारी, यात्रा के अनुभव और रेलवे से संबंधित विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान करते हैं। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूं कि राजभाषा विभाग से संपर्क बनाए रखें एवं समय-समय पर आयोजित सभी कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लें जिससे आपके ज्ञान का भंडार और अधिक समृद्ध होता रहे।

अपने व्यक्तिगत विचारों को सार्वजनिक मंच पर लेखन कौशल के माध्यम से व्यक्त करने के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा के प्रति लेखकों एवं पाठकों की रुचि में और भी अधिक वृद्धि हो, इसी उद्देश्य से रेल सुरभि पत्रिका का यह संयुक्तांक आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को पत्रिका के निरंतर और सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं एवं बधाई।

शुभकामनाओं के साथ।

(एस. ऐस. गुप्ता)
प्रधान मुख्य परिचालन प्रबंधक एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

लघुकथा

सबक

- सुधा मिश्रा द्विवेदी

"सुनती हो चलो कहीं आस-पास कुछ दिनों के लिए घूम आते हैं"- राकेश ने अपनी पत्नी रेवती से कहा।

"कहां घूमने जाओगे ? इस उम्र में मेरे तो घुटने ठीक से चलते नहीं, साथ में सुगर, प्रेशर और भी न जाने कितनी सारी बीमारियां हैं। दवा का झोला लेकर कहां-कहां भटकेंगे ?" - रेवती ने कहा।

"और इस उम्र में क्या घूमने की तमन्ना दिल में ही रह गई है, यदि हम लोग घूमने जाएंगे तो कुछ पैसे तो खर्च होंगे, वहीं पैसे रहेंगे तो हमारे बुढ़ापे में काम आएंगे ।"

राकेश ने कहा--- 'हम दोनों की पेंशन मिलकर ₹70000 क्या हमारे लिए कम है, बच्चे सेटल हो गए हैं हमें उन्हें कुछ ना देना ना लेना ।"

राकेश - रेवती दोनों सरकारी नौकरी से रिटायर्ड हैं, इनके तीन बच्चे हैं एक लड़की, दो लड़के सब बाहर रहते हैं लेकिन यह अच्छी बात है कि भारत में ही रहते हैं ।इनको विदेश जाने की अनुमति राकेश ने नहीं दी ।

खैर, जो भी हो दूसरे दिन दोनों पति-पत्नी अपने तीन मित्रों के साथ,अपना थोड़ा बहुत सामान बांधकर पुरी जाने की तैयारी करने लगे ।वहां जाएंगे तो कुछ दिन आराम से रहेंगे ,प्रभु जगन्नाथ के दर्शन करेंगे । फिर पुरी अपने यहां से ज्यादा दूर भी नहीं है, यह सोचकर एजेंसी वाले से टिकट लेकर रात को सारा सामान समेट कर सुबह की गाड़ी से जाने की तैयारी हुई । सुबह-सुबह तैयार हो रहे थे कि दरवाजे की बेल बजी । राकेश जी ने दरवाजा खोला तो देखा कि सामने छोटी बहू और बेटा खड़े हैं ।

"अरे तुम लोग वो भी बिना बताए ।" - रेवती जी और रमेश जी एकसाथ बोल पड़े ।

बेटे ने कहा नहीं पापा हमको अचानक आपकी बहुत याद आ रही थी इसलिए हम लोग आ गए । आप तो जानते हैं हमारे पास कोई झंझट नहीं है हमारे बच्चे भी नहीं है फल स्वरुप आने में कोई परेशानी नहीं हुई। हम लोग एक सप्ताह की छुट्टी लेकर आए हैं ।

राकेश जी बोले -"अरे हमलोग तो अभी पुरी जा रहे हैं एक सप्ताह के लिए।"

उन लोगों ने कहा ठीक है हम कुछ दिनों के लिए यहां रुकेंगे ।घर की निगरानी भी हो जायेगी ।

ठीक है हम दोनों पति-पत्नी घूम कर आते हैं ।कहकर वे दोनों पुरी के लिए रवाना हो गए। पुरी में चार दिन बहुत अच्छे गुजरे जगन्नाथ भगवान के दर्शन किए । आसपास के दर्शनीय स्थलों का दर्शन किया और घर लौट आए । यहां लौटे तो बहू बेटे ने खूब आवभगत की ।उतने में देखते हैं कि घर में तीन चार लोग आए ।

राकेश जी ने पूछा -क्या बात है कौन है ये लोग ?

बेटा बोला -"घर बेचने के लिए इन लोगों को बुलाया है आप दो लोग हो इतने बड़े घर का क्या करोगे ? हम दो भाई हैं आप भैया के साथ रह जायेंगे मां मेरे साथ रह जाएगी।"

राकेश जी का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया, गुस्से के मारे होंठ फड़कने लगे, शरीर कांपने लगा। रेवती जी डर गई कि कहीं बेहोश ना हो जाएं। राकेश जी दिमाग के बहुत ठंडे रहते थे जल्दी नाराज नहीं होते थे, लेकिन अपने बेटे की बात सुनकर उनका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया वह जो लोग घर खरीदने आए थे उनसे हाथ जोड़कर बोले-" जाइए मुझे घर नहीं बेचना है ।"

इसके बाद उन्होंने बहू और बेटे का हाथ पकड़ा और दोनों को बाहर निकाल दिया है। कहा--- जब तक हम दोनों में से एक भी जिंदा रहेगा यह घर नहीं बिकेगा।

जिला अध्यक्ष, हावड़ा, प.बंगाल

लेख

भारत और दुनिया का सबसे बड़ा रेलवे मार्शलिंग यार्ड

-विमलेश चंद्र

मार्शलिंग यार्ड उसे कहते हैं, जहां पर माल गाड़ियों का आगमन या प्रस्थान और मरम्मत होता है। मार्शलिंग यार्ड में मालगाड़ियों का शंटिंग, मरम्मत, संचालन, स्टेबलिंग इत्यादि किया जाता है। मार्शलिंग यार्ड मुख्यतः 3 तरह के होते हैं। फ्लैट यार्ड, ग्रेविटी यार्ड और हम्प यार्ड। मार्शलिंग यार्ड में वैगनों का सेटिंग करना या जोड़ना या वैगनों के निकालने या अलग करने का कार्य तो किया ही जाता है, साथ ही साथ ठीक या सही वैगनों को एक साथ जोड़ने और फिर मालगाड़ी बनाकर और उनका परीक्षण या जांच करने के बाद उनको अगली यात्रा के लिए रवाना किया जाता है। मार्शलिंग यार्ड में वैगनों को आपस में जोड़ने या अलग करने के अलावा वैगनों का छोटा या बड़ा मरम्मत कार्य भी किया जाता है तो स्वाभाविक रूप से मरम्मत के लिए जरूरी मशीन, बड़े कार्य वाले मरम्मत शेड, बिजली या प्रकाश की व्यवस्था, छोटे या पोर्टेबल मशीनों को लाने ले जाने के लिए पाथवे या पक्का रास्ता, स्टाफ का सामान रखने के लिए स्टाफ रूम, मरम्मत का सामान रखने के लिए स्टोर रूम इत्यादि होते हैं। इंजन खड़े करने के लिए अलग रेल लाइन की व्यवस्था होती है। ज्यादा बड़ा यार्ड है तो वहां पर आने वाली गाड़ियों के लिए अलग रेलवे लाइन और जाने वाली गाड़ियों के लिए अलग रेलवे लाइन होती हैं। वैगन मरम्मत करने के लिए अलग रेलवे लाइन और वैगनों की छंटाई या शॉर्टिंग करने के लिए अलग रेलवे लाइन की व्यवस्था होती है। एक तरह से कह सकते हैं कि यहां मालगाड़ियों के लिए हर वह सुविधा उपलब्ध होती है जो उनके संचालन से जुड़ी हो और स्टाफ उसकी मरम्मत कर सके और फिर एक फ्रेश या नई मालगाड़ी बनाकर वहां से रवाना किया जा सके। पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन का यह यार्ड, भारत के साथ-साथ एशिया का सबसे बड़ा

मार्शलिंग यार्ड है। यह उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले के अन्तर्गत आता है। जोनल रेलवे में यह पूर्व मध्य रेलवे के अंतर्गत पंडित दीन दयाल उपाध्याय मंडल के अंतर्गत आता है। 05 अगस्त, 2018 को मुगलसराय जंक्शन का नाम बदल कर पंडित दीन दयाल उपाध्याय नगर जंक्शन कर दिया गया था जबकि मंडल का नाम इसके 18 माह बाद बदला गया।

मुगलसराय- जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि इसका नाम मुगलसराय इसलिए पड़ा क्योंकि मुगल शासक ग्रांट ट्रंक रोड से इधर से ही आते-जाते थे और फिर यहां रुक कर विश्राम करते थे। सराय का मतलब विश्राम स्थल या विश्रामालय होता है। उस हिसाब से इसका नाम मुगलसराय पड़ा। ग्रांड ट्रंक रोड जो कि बहुत पुरानी सड़क है। वह यहीं मुगलसराय से होकर जाती है। रेलवे की तरह यह सड़क भी उत्तर भारत को पूर्वी भारत से जोड़ती है। सोलहवीं शताब्दी में दिल्ली के सुल्तान शेरशाह सूरी ने इस सड़क को पक्का करवाया और बहुत सारे सुधार किए।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन- एशिया का सबसे बड़ा मार्शलिंग यार्ड

यात्री गाड़ियों के प्लेटफार्म को छोड़ दें तो यहां एक प्लेटफार्म केवल मालगाड़ियों के लिए ही बना है और बाकी 55 रेल लाइन इसके यार्ड में बनीं हैं। मतलब यहां की मालगाड़ियों के लिए कुल 56 रेलवे लाइन बनी हुई हैं। अब इतनी रेलवे लाइन बनी हैं तो खुद अंदाज लगा सकते हैं कि यहां से बहुत ज्यादा मालगाड़ी आती और जाती हैं। हावड़ा की तरफ से आने पर काफी पहले से ही यह यार्ड दिखाई देना शुरू हो जाता है। अंग्रेजों के समय से ही यह यार्ड काफी बड़ा यार्ड है। यह वाराणसी के पास उत्तर प्रदेश में पड़ता है। माना जाता है कि यह एक बोतल नेक की तरह है। मतलब सभी तरफ से बहुत सारी यात्री गाड़ियां और मालगाड़ियां आती हैं और यहां आकर सभी कंजेस्टेड या एक साथ ग्रुपिंग होकर फंस जाती हैं जिससे उनमें देरी होती है। यह यार्ड वर्ष 1862 में ईस्ट इंडियन रेलवे (EIR) द्वारा बनवाया गया था। इसे

उत्तर भारत का और पूर्वी भारत का रेलवे का जॉइंट पॉइंट भी कहा जाता है। स्वभाविक रूप से पहले यहां सबसे ज्यादा मालगाड़ियों के सामानों की अदला-बदली की जाती थी। अब मालगाड़ियां लंबी दूरी तक चलने लगी हैं तो यहां एक मालगाड़ी का सामान निकाल कर दूसरी मालगाड़ी में रखने का सिस्टम बंद हो गया है। वर्ष 1887 में बना डफरिन रेलवे ब्रिज इसे और वाराणसी को जोड़ता है। अब बहुत दूरी तक सीधी या डाइरेक्ट मालगाड़ी चलने के कारण इसके यार्ड का कार्य कम हुआ है और यहां पर प्रतिदिन 1500 वैगन की देखरेख की जाती है लेकिन फिर भी व्यस्त समय में यहां प्रतिदिन 5000 वैगनों का आदान-प्रदान होता है।

यहां के यार्ड का बिजलीकरण वर्ष 1963-65 में हुआ था जबकि स्टेशन पर बिजलीकरण इससे 2 वर्ष पहले ही मतलब वर्ष 1961-63 में हो गया था। यह यार्ड और स्टेशन, दिल्ली-हावड़ा मेन लाइन मतलब इस ट्रंक रूट का एक हिस्सा है। देश में 25 केवी बिजलीकरण का कार्य वर्ष 1957 में शुरू हुआ था और 07 जनवरी 1977 को पूर्व रेलवे और उत्तर रेलवे का इस ट्रंक रूट का बिजलीकरण कार्य पूरा होकर बिजली इंजन वाली गाड़ियां चलने लगी थी। यहां यात्री गाड़ियों के लिए कुल 8 प्लेटफार्म हैं। इतना बड़ा स्टेशन है और एशिया का सबसे बड़ा मार्शलिंग यार्ड है तो स्वभाविक रूप से यहां डीजल इंजन शेड, बिजली इंजन शेड, कोचिंग डिपो, वैगन डिपो रहेगा ही। यहां 4 अलग-अलग रुट की रेलवे लाइन आती हैं जिनमें एक रेल लाइन पटना स्टेशन की तरफ से, दूसरी रेल लाइन सासाराम स्टेशन की तरफ से, तीसरी रेलवे लाइन वाराणसी जंक्शन की तरफ से और चौथी रेलवे लाइन चुनार की तरफ से आती है। इन चारों रेल लाइनों से आगे जाकर कई रेल लाइन निकल जाती है। यहां पर कुल लगभग 8000 रेलवे स्टाफ कार्यरत हैं। रेलवे के किसी बड़े कारखाने को छोड़ दें तो देश में किसी एक यार्ड में इतने स्टाफ और कहीं भी कार्यरत नहीं हैं। मुगलसराय वैगन यार्ड 12.5 किलोमीटर लंबा है। यहां बिजली के इंजन की व्यवस्था के लिए एक शेड है जो 147 बिजली इंजन की देखरेख करता है। यहां से प्रतिदिन 210 मालगाड़ी आती और

जाती हैं। यदि यात्री गाड़ियों की संख्या जोड़ लें तो यह संख्या 250 से ज्यादा हो जाती है। यदि इस यार्ड की सभी रेल लाइन की कुल लंबाई जोड़ी जाय तो यह 250 किमी से भी लंबी हो जाती है। इतना बड़ा यार्ड है तो इसे कंट्रोल करने के लिए कुल 22 कंट्रोल केबिन बने हैं। यहां सभी रेल लाइन, एक यार्ड में या एक जगह या एक साथ एक दूसरे के समान्तर में नहीं हैं बल्कि कुल 12 नाम से बंटी हुई पर अलग-अलग जगह पर स्थित हैं। इसमें स्टेशन लाइन, मार्शलिंग यार्ड लाइन और अन्य रेल लाइन (शेड, डिपो इत्यादि) को मिलाकर लगभग 210 रेलवे लाइन हैं। हम इन सभी रेल लाइन का एक साथ एरियल व्यू फ़ोटो तो ले नहीं सकते लेकिन यदि गुगल मैप पर मुगलसराय मार्शलिंग यार्ड खोजें तो रेल लाइनों का एक दूसरे से जुड़ी हुई या एक दूसरे को क्रॉस करती हुई एक लंबी श्रृंखला दिखेगी और समझ ही नहीं आएगा कि इतनी सारी रेल लाइन एक दूसरे से कैसे जुड़ी हैं। कहीं सभी रेल लाइन एक बोतल नेक की तरह पतली या संकरी हो जा रहीं हैं तो कुछ दूरी पर एक दम फैल जा रहीं हैं। इसी बोतल नेक के कारण यहां गाड़ियां अक्सर लेट हो जाया करती हैं।

भुसावल-एशिया का दूसरा सबसे बड़ा मार्शलिंग यार्ड- भुसावल में एशिया का दूसरा सबसे बड़ा मार्शलिंग यार्ड है। यहां कुल 243 रेलवे लाइन हैं। भुसावल से प्रतिदिन 300 रेलगाड़ी गुजरती हैं। भुसावल स्टेशन वर्ष 1863 में खुला था। यहां मालगाड़ियों के लिए एक काफी बड़ा वैगन डिपो है। यहां का तत्कालीन भाप इंजन शेड वर्ष 1919 में बना था। जब यह बना था तब यह एशिया का सबसे बड़ा और दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा भाप इंजन शेड था।

विश्व का सबसे बड़ा मार्शलिंग यार्ड, बेली यार्ड अमेरिका

बेली यार्ड, विश्व का सबसे बड़ा मार्शलिंग यार्ड है। यह विश्व में सबसे बड़ा ऐसा यार्ड है, जहां पर सबसे अधिक मालगाड़ियों का आना-जाना रहता है। यह उत्तरी अमेरिका के नार्थ प्लेट नेब्रास्का नामक

जगह पर स्थित है। यह यहां के रेलवे, यूनियन पैसिफिक रेल रोड द्वारा संचालित किया जाता है। इसे यूनियन पैसिफिक रेल रोड के तत्कालीन अध्यक्ष एड. एच. बैली के नाम पर रखा गया है जिन्होंने इस रेल रोड यार्ड को आधुनिक बनवाया और सबसे छोटे पद से यहां अपनी रेलवे नौकरी शुरू की और सबसे बड़े पद से सेवा मुक्त हुए थे। इस यार्ड की लंबाई 13 किलोमीटर और चौड़ाई 3.2 किलोमीटर है। यहां कुल 200 अलग-अलग रेलवे लाइन हैं जिसमें 17 रिसीविंग लाइन हैं और 16 डिपार्चर लाइन हैं। यहां 2600 लोग काम करते हैं। यहां से प्रतिदिन 139 मालगाड़ी से 14000 वैगनों को भेजा जाता है। इस यार्ड में दो हम्प यार्ड भी हैं। यहां पर हर दिन 3000 कार या कोच की देखरेख भी होती है। बेली यार्ड दुनिया का सबसे बड़ा रेलवे यार्ड है जहां पर वैगनों के साथ-साथ कोच का और हर महीने 8500 रेल इंजनों की भी देखरेख होती है। इसकी स्थापना वर्ष 1866 में हुई थी और यह 2850 एकड़ में फैला हुआ है। यहां 985 स्विच हैं और 766 टर्न आउट हैं और 17 आने वाली (रिसीविंग) लाइन और 16 जाने वाली (डिपारचर) लाइन हैं। यहां पर इंजनों की फ़्यूलिंग के लिए 3 सेंटर हैं जहां इंजनों को फ्यूल दिया जाता है। इसे वर्ष 1995 में विश्व का सबसे बड़ा मार्शलिंग यार्ड होने के कारण गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड में स्थान मिला था।

सेवानिवृत्त रेल अधिकारी

पश्चिम रेलवे

****

लेख

भ्रष्टाचार को ना कहें एवं राष्ट्र के प्रति वचनबद्ध हों

- **सुकान्त मिश्रा**

भ्रष्टाचार की परिभाषा

भ्रष्टाचार सरकारी अधिकारियों राजनेताओं व्यापारिक नेताओं या कानून प्रवर्तन अधिकारियों जैसे सत्ता या प्राधिकरण के पदों पर व्यक्तियों द्वारा बेईमान या धोखाधड़ी वाले व्यवहार को संदर्भित करता है।

भ्रष्टाचार के प्रकार

भ्रष्टाचार कई रूप ले सकता है जिसमें रिश्वतखोरी, गबन, भाई-भतीजावाद, सत्ता का दुरुपयोग, धोखाधड़ी, अनुचित पक्ष लेने के लिए मुफ्त का वादा करना आदि शामिल हैं।

भ्रष्टाचार के कारण

1) पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी और इसकी गोपनीयता के साथ खिलवाड़।
2) राजनैतिक प्रभाव।
3) राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी।
4) कमजोर और धीमी कानूनी प्रणाली।
5) गरीबी और आर्थिक अवसरों की कमी।
6) उन्नत इष्टतम प्रौद्योगिकी के उपयोग की कमी।
7) प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग।
8) संसाधनों का अनुचित आबंटन।
9) शक्ति और स्थिति प्राप्त करने के लिए स्वार्थी उद्देश्यों के लिए क्षेत्रीय भाषाई और जातिगत बाधाओं का निर्माण करना।

भ्रष्टाचार के परिणाम

1) राष्ट्रीय अखंडता के लिए खतरा।
2) क्षेत्रीय भाषाई और जातिगत बाधाएं पहले से कहीं अधिक सामने आ रही हैं।
3) विकसित राष्ट्र प्राप्ति में बाधा।
4) सार्वजनिक संस्थानों में विश्वास की हानि।
5) राजनीतिक अस्थिरता।
6) कमजोर शिक्षा और बुनियादी स्वास्थ्य।
7) सार्वजनिक सेवाओं में इष्टतम गुणवत्ता की कमी।
8) आर्थिक असमानता और गरीबी।
9) सीमित नौकरी के अवसर।

भ्रष्टाचार निवारण के उपाय एवं समाधान

1) संरचनात्मक सुधार व नियमों को आवश्यकता के अनुसार लचीला बनाना।
2) संस्थानों की निर्णायक शक्ति को मजबूत करना उदाहरण के लिए लचीलेपन के साथ
7) आजीविका और नैतिक आय के स्तर को अनुकूलित करना उदाहरण के लिए कम आपूर्ति भ्रष्टाचार की ओर ले जाती है।
8) ईमानदार संस्कृति को बढ़ावा देना।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित निर्णय लेना और सरकारी व निजी क्षेत्र में बढ़ती पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ सार्वजनिक संस्थानों में लचीले डिजिटल मुद्रा मंच को बढ़ावा देना।

3) नैतिक नेतृत्व को बढ़ावा देना।
4) जागरूकता बढ़ाना।
5) भ्रष्टाचार की रिपोर्टिंग पर प्रचार।
6) सूचना देने वालों की सुरक्षा और गोपनीयता का आश्वासन देना और उन्हें पुरस्कृत करना।
9) मांग आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करना।
10) घृणा और गलत सूचना फैलाने वालों को अवरुद्ध या दंडित करें।
11) सार्वजनिक बहसों, निबंधों, चित्रों, नारों एवं नाटकों आदि को प्रोत्साहित करें ताकि जनता में भ्रष्टाचार विरोधी भावनाओं को फैलाया जा सके एवं यह सुनिश्चित किया जा सके।

सारांश

भ्रष्टाचार के दुष्परिणाम व सख्त कार्रवाइयों को स्कूल, कॉलेज एवं आम जनता में सफलता पूर्वक असरदार रूप मे सार्वजनिक करें। कुछ विषय गोपनीय तो कुछ विषय सार्वजनिक होते हैं। आम जनजीवन को सशक्त रखते हुए आवश्यकतानुसार इन्हें लचीला रखकर संरचनात्मक सुधार की आवश्यकता है जिससे आम जनता इन उपायों से सहमत हो एवं स्वेच्छा से इनका पालन करें। प्रत्येक भारतीय भ्रष्टाचार का स्वेच्छा से असहयोग करें। हम भारत में असहयोग आन्दोलन को पहले भी सफलतापूर्वक अभिलक्षित कर चुके हैं। यह सम्भव है। विकसित भारत राष्ट्र का सपना सच में सच तभी होगा जब धर्म, जाति, लिंग के अवरोध कम होंगे। इसके लिए हम वचनबद्ध हों कि प्रत्येक भारतीय की शिक्षा, स्वास्थ्य, उपलब्धियां, उन्नत आय एवं उनको उपलब्ध संसाधन विकसित राष्ट्र के मूल स्वरूप, संयुक्त राष्ट्र संघटन की मूल परिभाषा सच में साकार सफल हो।

निष्कर्ष

मनुष्य अपने दृढ़ संकल्प के लिए जाना जाता है और उसने अपने मस्तिष्क प्रयोग के कारण इस ग्रह पर सभी उपलब्ध जीवित और मौजूदा प्रजातियों के बीच सभ्यता की दौड़ जीती है। इस पृथ्वी पर हर नैतिकता संभव है। हमारे देश में हमने कई महामारियों और भ्रष्टाचार को काफी हद तक समाप्त कर दिया है। हम एक दिन भ्रष्टाचार को भी पूरी तरह से अपने भारत देश से समाप्त कर देंगे । विकसित भारत राष्ट्र का सपना हम सच मे सफल साकार करेंगे।

वरिष्ठ परास्नातक शिक्षक, भौतिक विज्ञान

मध्य रेल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, भुसावल मंडल

कविता

विचारधारा

- **विवेक धुर्वे**

कैसी ये विचारधारा
बहती न जो मेरे पास
लिखना चाहूं बहुत कुछ
पर लिख ना पाऊं कुछ भी खास
लिखना चाहूं ऐसा कि
हो यकीन सबको मुझ पे
लिखूं मैं कुछ ऐसा
जो साथ दे किसी को दुख में
ऐसी हो मेरी कविता
कि गाएं सब अपने सुख में
लिखूंगा ऐसा तब मैं
जब बहेगी मेरी ये विचारधारा
लिखूं ऐसी रचनाएं मैं
सुनें उसे संसार सारा
जाने कब बहेगी मेरी ये विचारधारा ।

छात्र-कक्षा 12वीं
एकलव्य मोडल रेसिडेन्सियल स्कूल,
बालाघाट, मध्य प्रदेश

दुविधा

- **जितेंद्र गोंड**

कैसी दुविधा में ला दिया इस जिंदगी ने
कैसी सुविधा चाहिए इस मन को बंदगी में
सपनों के बोझ ने ही मारा सारे सपनों को
जो पास थे, हमने ही दूर किया अपनों को
क्या हुआ अगर मैंने शांत हो के जीना चाहा
क्यूं किसी ने मुझ पर हक जताया, और मुझे पाना चाहा
चाहत जताने में हक नहीं होता
हक जताने का कोई वक्त नहीं होता
जिनको सहारा देने के लिए हम खड़े रहें
उनको लगा उनके लिए हम यू ही पड़े रहें
जिस दिन उन्हें पड़ी हमारी जरूरत
बिन बुलाये, हम झंडा गाड़ के खड़े रहें
कोई तो है जो दे रहा है ये सुविधा लिखने की
उसे पता है क्या है हमारी दुविधा जीने की

संरक्षा अधिकारी
सवारी डिब्बा कारखाना
माटुंगा, मध्य रेल

****

लेख

‘डर... उच्चतम सीमा तक’!

- **विकास कुमार बघेल**

मेरी दिपावली की लगातार चार दिन की छुट्टियां पड़ गयी। दो दिन तो त्यौहार मनाने में निकल गये बाकी के दो दिन मेरे पास फुर्सत के थे। मैंने अपनी पत्नी से कहा कि ‘चलो कहीं घूमने चलते है’? उन्होंने त्यौहार की थकावट का बहाना बना कर टालने की कोशिश की। मैं भी समझ गया कि त्यौहारों के समय में पत्नियों को काफी काम रहता है, इसलिए मैंने ज्यादा जिद्द नहीं की और मैं अकेला ही कहीं घूमने का कार्यक्रम बनाने लगा, फिर सोचा कहां जाया जाए ? । तभी मुझे ध्यान आया कि चलो ! ‘’माता सप्तश्रृंगी मंदिर” के दर्शन करके आता हूं, जो कि नाशिक से 65 किमी की दूरी पर स्थित है, यदि कल सुबह जाऊंगा तो शाम तक लौट के भी आ जाऊंगा । ऐसा विचार आते ही! मैंने कल जाने का मन बना लिया और अपनी पत्नी को बता दिया, पत्नी ने अपनी मौन स्वीकृति भी दे दी ।

सुबह आठ बजे घर से निकल गया और नाशिक, सीबीएस बस स्टैंड पहुंचकर वहां से ‘सप्तश्रृंगी माता मंदिर’ के लिए बस ढूंढने लगा तो किसी ने बताया कि मंदिर के लिए बसें बहुत कम है तो तुम वणी जाने वाली बस पकड़ो, वह लगातार 15-15 मिनट के अंतराल पर चलती है, वह तुम्हें मंदिर से दस किमी की दूरी पर उतार देगी फिर वहां से ऊपर जाने के लिए टैक्सी या अन्य साधन के द्वारा मंदिर जा सकते हो। वैसे कुछ बसें सीधी मंदिर भी जाती है लेकिन उनकी संख्या काफी कम है जबकि वणी जाने वाली बसें काफी है जोकि सूरत तक जाती है । मंदिर नाशिक शहर से तकरीबन 65 किलोमीटर की दूरी पर 4800 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और यह सह्याद्री पर्वत श्रृंखला पर स्थित है। इस मंदिर के एक तरफ गहरी खाई और दूसरी ओर ऊंचा पहाड़ मौजूद है। सप्तश्रृंगी देवी मंदिर में स्थापित देवी की मूर्ति, भूगर्भित है

जिसको अर्धशक्तिपीठ के रूप में भी पूजा जाता है। ऐसी मान्यता है कि यह नाशिक की कुल देवी के रुप में भी इसको पूजा एवं जाना जाता है।

खैर ! मैं वणी जाने वाली बस में बैठ गया जो कि चलने को तैयार थी । लगभग एक घंटे के बाद मैं वणी उतर गया । मैंने वहां पर चारों ओर नजर दौड़ाई तो वहां का नजारा मन को स्फूर्ति, तरोताजा एवं लुभावना करनेवाला था क्योंकि चारों ओर पड़ाह ही पहाड़ और उन पर हरियाली नजर आ रही थी । वहीं से काफी दूरी पर मंदिर वाला पहाड़ दिखायी दिया। मैंने यहीं से हाथ जोड़कर माता रानी का मन ही मन स्मरण किया ।

मैंने वहां के एक स्थानीय निवासी से पूछा कि मंदिर के लिए बस या कोई साधन है वहां जाने के लिए, उसने मुझे मराठी में कहा तो मैंने उससे कहा कि मुझे मराठी अच्छी तरह से नहीं आती है । क्या तुम मुझे हिंदी में बता सकते हो ? तो उसने मुझे बड़े गौर से देखा और लापरवाही से कहा कि अभी एक टैक्सी गई है, थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा, फिर मैंने दुबारा से पूछा कि मंदिर जाने के लिए और कौन से साधन है, उसने कहा कि 'तुम पैदल भी जा सकते हो'! यहां से पैदल का भी रास्ता है पहाड़ियों के रास्ते काफी लोग तुम्हें रास्ते में जाते हुए मिल जाएंगे । उसकी बात सुनकर मैं काफी रोमांचित हो गया! मैंने सुन रखा था कि यदि किसी मंदिर की यात्रा पैदल की जाए तो उसका काफी पुण्य मिलता है क्योंकि माता रानी हमारी श्रद्धा भाव से काफी प्रभावित हो जाती है । ऐसा सोचकर मैंने भी पैदल जाने का मन बना लिया । वणी से मंदिर, गाड़ी द्वारा 'दस' किमी के दूरी तय करनी पड़ती है और यदि आप पैदल जाते हैं तो भी आपको 'दस' किमी तो चलना ही पड़ेगा । मैंने माता रानी का नाम लेकर अपनी पैदल यात्रा प्रारंभ कर दी।

शुरु में काफी उत्साहित था और मुझे बड़ा अच्छा लग रहा था क्योंकि यह पहाड़ों पर मेरी पहली पैदल यात्रा थी। मेरे पास सामान के रुप में एक छोटा सा पीठू बैग था जिसमें पानी की बोतल और मोबाइल चार्जर और एक स्वैटर था जोकि ऊंचाई पर पहुंचने पर ठंड न लगे । वह काफी भारी नहीं था, उसको

आसानी से ले जाया सकता है । मैंने गणना की मैं कितने समय तक पहुंच जाऊंगा ? तो मुझे लगा यदि मैं तेज रफ्तार से चलूंगा तो तीन घंटे में और आराम से चलने में चार घंटे के लगभग लग जाएंगे । मैंने तेजी से यात्रा आरंभ कर दी क्योंकि शुरु में तो बड़ा अच्छा लग रहा था कि रास्ते में लोग मिल जाएंगे तो उनके साथ चलेंगे तो समय का मालूम नहीं पड़ेगा । लेकिन जैसे ही मैं लगभग 3 किमी तक ऊपर गया होउंगा तो अचानक मुझे ऊपर की तरफ से दो-तीन लोग दिखाई दिए जोकि वहां के स्थानीय निवासी लग रहे थे । उनको देखकर मैं खुश हुआ कि चलो कोई तो मिला । लेकिन मैं जैसे ही उनके पास जाता जा रहा था तो मुझे उनके इरादे नेक नजर नहीं आ रहे थे वह वहीं रुक कर मेरी तरफ ललचायी सी दृष्टि से घूरे जा रहे थे जैसे वह मेरे पास आने का इंतजार कर रहे हों । उनके इस बर्ताव को देख कर मेरी सांसे थम गई और मेरी छठी इंद्रिय मुझे सचेत कर रही थी कि कहीं कुछ तो गड़बड़ होने वाला है ! मैं अंदर तक कांप गया क्योंकि आस-पास कोई भी नजर नहीं आ रहा था जिससे मदद मिल सके । मेरा मन बैचनी और किसी प्रकार की अनिष्ट आशंका से भयभीत हो गया । मेरे पास नया मोबाइल और दो-तीन हजार रुपये भी थे। मैं सोचने लगा यदि इन्होंने मुझे लूट लिया तो कोई बात नहीं ! लेकिन कहीं इन्होंने मेरे साथ कोई अनहोनी कर दी तो मेरे परिवार का क्या होगा ? मैं अनगिनत आशंकाओं से घिर गया और अजीब तरह के बुरे-बुरे ख्याल आ रहे थे। उस समय मेरे दिमाग ने काम करना बंद कर दिया और कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या करुं ? वापस लौटना मुझे सूझा नहीं बल्कि पता नहीं क्या सोच कर ! मैं माता रानी का नाम जोर-जोर से लेते हुए दूसरी तरफ ऊबड़-खाबड़ वाली जगह से, उनसे बचने के लिए ऊपर चढ़ने लगा जोकि मुझे वही उपयुक्त लगा । जैसे मैं दूसरी तरफ चढ़ने लगा तो उनको समझ आ गया कि मुझे लूटने वाले हैं । वे लोग मेरी तरफ देख कर हँसने लगे ! लेकिन मैं तो अपनी जान बचाने के लिए भाग रहा था । बाद में मैंने उनकी तरफ देखा तो वह नीचे हंसते और बातें करते हुए उतर रहे थे । माता रानी का चमत्कार ही था ! जिन्होंने मेरी जान बचाई, मैं मन ही मन माता रानी को धन्यवाद दे रहा था ।

उनको नीचे उतरते हुए देख कर मेरी जान में जान आई और मैंने संतोष की सांस ली, फिर थोड़ी देर के लिए एक चट्टान पर बैठ कर पानी पिया क्योंकि मेरा गला सूख रहा था और सांस भी तेजी से चल रही थी । थोड़ी देर आराम करने के बाद मेरे मन मे ख्याल आ रहा था कि मैंने बेकार में ऐसा रास्ता चुना । मैं माता रानी का बार-बार नाम लेता हुआ सावधानी से आगे बढ़ने लगा, जैसे मैंने अपने पैरों में पहिए लगा लिए हों । मैंने अपने कान में ईयरफोन लगा लिया ताकि गाने सुनते हुए समय का पता न चले । मैं आगे बढ़ता ही जा रहा था लेकिन मुझे रास्ते में कोई भी तीर्थ यात्री (भक्त) दिखाई नहीं दे रहा था, जैसा कि नीचे व्यक्ति ने बताया गया था कि तुम्हारे को बहुत लोग मिल जाएंगे रास्ते में शायद उसने मुझसे झूठ बोला था । अब मैंने करीब 6 किमी की दूरी तय कर ली थी और 4 किमी की यात्रा अभी शेष थी । जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता जा रहा था मंदिर नजदीक आता जा रहा था, मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था ।

एक मोड़ पर, अचानक ! मेरे सामने से तेजी से कोई जैसे पूंछ मारते हुए, फांदता हुआ निकला, मेरे मुंह से अचानक निकला 'बचाओ' और मैं जमीन पर गिर पड़ा । मैंने संभलते हुए खड़े होकर सामने देखा तो दंग रह गया ! थोड़ी ही दूरी पर एक लंगूर मुझे घूरे ही जा रहा था ! मेरा तो 'काटो तो खून नहीं' वाली स्थिति हो गयी । अब तो बुरे फंसे ! भाग भी नहीं सकता था क्योंकि यदि मैं भागूंगा ? तो वह मेरे साथ कुछ भी कर सकता है ! मैंने डरते हुए आस-पास नजर दौड़ाई तो जैसे मेरा खून पानी बन गया हो वाली स्थिति हो गई थी क्योंकि आस-पास बहुत से लंगूर ही लंगूर दिखाई दे रहे थे और उनको देखकर डर के मारे मेरे पैर कांपने लगे, अब मुझे अपना अंतिम समय नजदीक आता दिखाई दे रहा था और वे 'साक्षात् यमदूत' जैसे नजर आ रहे थे । मुझे बार-बार अफसोस हो रहा था कि मैंने ऐसा रास्ता क्यों चुना ? जोकि डर, भय, डरावना और जोखिमों से भरा हुआ है । लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता था क्योंकि मैं अब तो उतर भी नहीं सकता और ऊपर चढ़ भी नहीं सकता था । मैंने माता रानी से मन ही मन में कहा क्यों, मेरी परीक्षा ले

रही हो ? यदि आपको मेरा ऊपर चढ़ कर आना पसंद नहीं था तो मना कर देती, मैं नहीं आता । पता नहीं मैं क्या-क्या बडब़ड़ाता जा रहा था? ।

लेकिन मैं स्थिर खड़ा रहा और कुछ भी हरकत नहीं कर रहा था और ना ही मैं उसकी तरफ देख रहा था । मुझे पता था कि किसी जंगली जानवर के सामने यदि शांत खड़े रहें तो वह अपना ध्यान आपसे हटा लेता है । इस प्रकार से मुझे शांत देखकर लंगूर भी शांत हो गया उसको लगा था कि मैं उसको मारने के लिए आया हुआ हूं लेकिन मेरे इस प्रकार से शांत भाव को देखकर वह समझ गए कि हमें मारने या पकड़ने नहीं आया है । वह थोड़ी देर बाद धीरे से पीछे मुड़कर ऊपर पहाड़ पर चढ़ गया । एक बार मेरी फिर जान में जान आई । लेकिन डर बराबर बना हुआ था क्योंकि आस-पास बहुत से लंगूर पेड़ों और पहाड़ों पर बैठे हुए थे । जोकि अपने खाने-पीने या अन्य कार्यों में व्यस्त थे ।

नाशिक और उसके आस-पास ऐसे भयावान सुनसान पहाड़ों के बारे में मैंने सुन रखा था कि तेंदुआ (बिवट्या) बहुत घूमते रहते हैं और कई बार वह लोगों पर हमला भी कर देते हैं । मुझे डर के मारे ऐसा प्रतीत होने लगा कि कहीं वह अचानक मेरे सामने आ गया तो ? उसकी डरावनी कल्पना मात्र से मेरे पैर वहीं पत्थर बन गए और मैं डर के मारे थर-थर कांपने लगा और मैं, "डर... उच्चतम सीमा तक" पहुंच चुका था । डर के मारे इधर-उधर नजर दौड़ाते हुए मेरे पास आगे बढ़ने के अलावा और कोई चारा नहीं था, तभी मुझे ख्याल आया कि पहले मैं एक मजबूत सी लकड़ी ले लूं ताकि फिर कोई जंगली जानवर पास न आ सके और लकड़ी की मदद से मैं अपनी सुरक्षा भी कर सकूं और उसके द्वारा ऊपर चढ़ाई चढ़ने में मदद भी करेगी । ऐसा सोचकर जल्दी से मैंने पास के ही एक पेड़ से मजबूत सी लकड़ी तोड़ ली और उसको अपनी सुरक्षा और सहारे के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा, मैंने एक बार भी इधर-उधर नजर नहीं दौड़ाई, सिर्फ माता रानी का बार-बार नाम लेते हुए ऊपर की ओर चढ़ता ही जा रहा था । माता रानी की कृपा से फिर मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई और मैं मंदिर के बिल्कुल नजदीक आ गया । मुझे ऊपर की

तरफ लोगों की हलचल दिखाई दे रही थी । मैंने अपनी गति बढ़ा दी और जल्दी ही मंदिर के प्रांगण में पहुंच गया और वहां पहुंचकर सब कुछ भूल कर माता रानी का कोटि-कोटि धन्यवाद अदा किया। मैंने एक बात नोटिस की कि मुझे कुछ लोग बड़ी अचंभित भरी नजरों से देख रहे थे कि यह किस तरफ से और किस प्रकार से यहां आया है ?

मदिंर में माता रानी के दर्शन से पहले मैंने प्रसाद लिया और किसी ने बताया कि मंदिर के दर्शन के लिए कम से कम 500 सीढ़ियां होगी । जिसके सहारे ऊपर चढ़कर सप्तश्रृंगी देवी के दर्शन किए जा सकते हैं । मैं भी अपनी सारी थकान और डरावनी यात्रा को भूल कर, तरोताजा सा महसूस करके, फिर ऊपर की तरफ जाने वाली सीढ़ियों के सहारे लाइन में लग गया । लगभग एक घंटे के बाद सप्तश्रृंगी माता के साक्षात दर्शन हुए तो मैं माता के सम्मुख उनकी सुंदरता और उनके अलौकिक दिव्य रुप के दर्शन पाकर धन्य हो गया और माता रानी को बार-बार मन ही मन धन्यवाद दे रहा था कि आपने किस प्रकार मेरी यात्रा सफल की और मुझे मुसीबतों से उभारा, कहते हुए मेरे अश्रुओं से अविरल धारा बहे जा रही थी और दूर से माता रानी के चरणों को धो रही थी । मुझे दिव्य आभास सा हो रहा था कि माता रानी सिर्फ मुझे ही भीड़ में से देख रही है और कह रही हो वास्तव में 'तुम्हीं मेरे सच्चे भक्त हो' ।

(यह पाठक की सच्ची घटना पर आधारित लेख है।)

वरिष्ठ अनुवादक

इरीन, नासिक रोड

****

कविता

प्रारब्ध

- **रामजी प्रसाद**

फुट पाथ पे जन्मे कुत्ते, जो किस्मत के मारे ।
कोई थोड़ा प्यार करे, कोई उन्हें दुत्कारे ।
कोई टुकड़ा रोटी फेंके, कोई डंडा सहियारे ।
एक रोटी के टुकड़े खातिर, घूमते मारे-मारे ।
कोई थोड़ा प्यार.....
पेट तो उनको भी है, भरने को झपटी मारे ।
गुस्सा तो उनमें भी है, गुस्से को कैसे उतारे ।
जीवन तो उनमें भी है, कैसे दिन गुजारे ।
कोई थोड़ा प्यार.....
कुछ कुत्ते ऐसे भी हैं, जो महलों में शान बघारें।
कंत शयन लें शयनगृह में, बन घर के रखवाले।
अपनी संतति दूर खड़ी, श्र्वान बैठा गोद् गठ मारे।
कोई थोड़ा प्यार.....
खाने में पिंड गोश्त मिले, दूध मलाई सारे।
सुबह शौच संग मर्दन करके, मालिक केश सवारे।
जो फुट पाथ पर जन्म लिए, कैसे भाग्य संवारे।
कोई थोड़ा प्यार.....
प्रारब्ध इसी को कहते है, जो पूर्व जनम में हारे ।
सोच समझ सत्कर्म करें, तो अगला जनम सुधारे।
सुगम सरल सत्संग समागम, मन को करे उजियारे।
कोई थोड़ा प्यार.....
जो परम धरम परमारथ सेवा, संग हरि नाम पुकारे ।
इस जीवन की यही सफलता, अगला जनम सुधारे ।
आओ प्यारे पथ प्रकाश में, क्यूं भटके अंधियारे ।
कोई थोड़ा प्यार ....

संरक्षा अधिकारी
सवारी डिब्बा कारखाना
माटुंगा, मध्य रेल

****

कविता

जीवन का मंत्र

- **त्रिपुरारी कुमार**

परिवर्तन ही जग में शाश्वत व्यवस्था है,
जग में काल की निष्ठा और पराकाष्ठा है ।।1।।

उद्यम ही परिवर्तन का चिरस्थायी तंत्र है,
यही जगत की प्रकृति का अनंत मंत्र है ।।2।।

परिश्रम ही सिद्धि की विशुद्ध बुनियाद है,
जगत में बाकी सब निरर्थक बेबुनियाद है ॥3॥

श्रमसाध्यता में ही जगत की वास्तविक सार्थकता है,
दुनिया में बाकी सब पूर्णतः निरर्थकता है ।।4।।

दृढता में ही सफलता का आगाज है
जगत में बाकी सब निरर्थक बेबुनियाद है ।।5।।

प्रतिबद्धता ही सफलता की शक्ति बिंब है,
जगत इसका ही मूलतः प्रतिबिंब है ।।6।।

आत्मविश्वास ही जीवन की प्रामाणिक संहिता है,
बाकी सब भविष्य की अनिश्चितता है।।7।।

लक्ष्य को साधना ही मानव तेरा उपलक्ष्य है,
लक्ष्यहीनता की प्रकृति ही अलक्ष्य है ।।8।।

मुख्य वाणिज्य निरीक्षक

पुणे, मध्य रेल

****

कविता

मैं संविधान हूँ

- **मुकेश कुमार**

राष्ट्र की एकता और
अखण्डता का मंत्र हूं।
भारत के सभी ग्रंथों में
मैं सबसे बड़ा ग्रंथ हूं।
भारतवासियों के लिए
मैं विधि का विधान हूं
जी हां, मैं संविधान हूं ।।

भारतवासियों के लिए
आजादी का पर्व हूं।
देश चलाने के लिए
भारतीयों का गर्व हूं।
मान हूं, सम्मान हूं
भारत का अभिमान हूं
जी हां, मैं संविधान हूं ।।

भारतवासियों का तन हूं
डॉ. भीमराव का मन हूं।
अपने दिल में समेटे
भारत का कण-कण हूं।
स्वतंत्रता का गान हूं
अस्मिता की पहचान हूं
जी हां, मैं संविधान हूं ।।
संसद मेरा दिल है, लेकिन
मेरा दिल अब रो रहा है।
क्योंकि, जो नहीं होना था
वो आजकल हो रहा है।
ऐसे तो विधि का विधान हूं
पर,सबसे ज्यादा परेशान हूं
जी हां, मैं संविधान हूं ।।

भारत में सुख-शांति के लिए
कर्त्तव्य-पथ मुझे बुलाता है।
पर, खद्दर और खाकी मुझे
सबसे ज्यादा रूलाता है।
स्वार्थ बड़ा या राष्ट्र बड़ा
मैं इसका इम्तिहान हूं
जी हां, मैं संविधान हूं ।।

उप स्टेशन अधीक्षक,

बदलापुर स्टेशन, बदलापुर

निबंध

विकास की राह में हिंदी की भूमिका

\- **राम मूर्ति**

भाषा सभ्यता की आत्मा होती है । विश्व की जितनी भी सभ्यताओं का अध्ययन किया गया, भाषा उनके उदय की धूरी पाई गई । भारत की सभ्यता अत्यन्त प्राचीन है और विशाल भौगोलिक क्षेत्र को समाहित किए हुए है । परिणामत: भारत एक बहुभाषी देश है । जिस प्रकार मोती की माला में, एक सूत कई मोतियों में पिरोकर, उनको इकट्ठा कर, एक माला होने की उपयोगिता प्रदान करता है, बिल्कुल उसी प्रकार हिंदी भाषा भारत में बोले जाने वाले विभिन्न बोलियों और भाषाओं के लिए एक सूत की भांति सरल,व्यापक,और प्रभावी संवाद की स्थिति को सफलता पूर्वक अनावरित करती है । हिंदी भाषा किसी विशाल नदी की तरह भारतीय जनमानस के ऊर्वर मन: पटल को सिंचती आई है और इसने भारत की कई बोलियों /भाषाओं/संस्कारों को अपने अंदर इस तरह समाहित करके रखा है कि विभेद इतना महिम हो गया, सर्वजन को ये अपनी भाषा, अपनी बोली ही लगती है ।

उपरोक्त कथन भारत में पाई जानेवाली विभिन्नताओं को देखकर अतिशयोक्ति लग सकती है परंतु अगर भारतीय भाषाओं/बोलियों/परंपराओं/संस्कारों का गौर से अध्ययन किया जाए तो भारतीय राष्ट्र के निर्माण की सहजता हिंदी भाषा ही है । इस संदर्भ में महात्मा गांधी ने उचित ही भाषा को सभ्यताओं की आत्मा कहा है ।

हिंदी भाषा का भारतीय राष्ट्र निर्माण में योगदान और उसके विकास में भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है । राह में एक बेहद आकर्षक, सुगठित और मजबूत सेतु के समान है । राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र विकास एक अंतहीन और जटिल प्रक्रिया है जिसके कई आयाम है । संक्षेपित करने की दृष्टि से, विकास के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर हिंदी भाषा के प्रभाव और उसकी भूमिका को आगे लिखी पंक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

किसी समाज के विकास को मुख्य रूप से निम्नलिखित बिंदुओं पर मूल्यांकित किया जा सकता है –

1. शैक्षणिक

2. व्यवसायिक
3. सामाजिक और सांस्कृतिक
4. प्रशासनिक

1. **शैक्षणिक विकास की राह में हिंदी की भूमिका**-:

शिक्षा किसी भी समाज के विकास की नींव है । प्रभावी शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती शिक्षा प्रदान करने का माध्यम है । उचित माध्यम का अभाव शिक्षा के प्रसार को निष्प्रभावी कर देता है । परंतु भारतीय समाज हिंदी भाषा की उपलब्धता की वजह से इस समस्या का शिकार होने से बच गया । हिंदी भाषा अपनी वैज्ञानिक सुगठन, अपनी सरलता की वजह से जनभाषा होते हुए शिक्षा प्रसार का प्रमुख माध्यम बना । हिंदी में उपलब्ध पाठ्य सामग्री की बहुलता ने शिक्षा के प्रसार को सघनता प्रदान की । आज हमारा देश 21वीं शताब्दी में जब विकास के नए प्रतिमान गढ़ रहा है तो इसके पीछे शिक्षित भारत वासियों का महत्वपूर्ण योगदान है ।

शिक्षा अगर मातृभाषा में प्रदान की जाए तो इस बात की विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधानों ने पुष्टि की है कि जटिल से जटिल शिक्षा छात्रों को सरलता से समझ आती है । इसी वजह से भारतीय छात्र हिंदी माध्यम में शिक्षा ग्रहण करके विश्व में विभिन्न विधाओं में अपना परचम लहरा रहे हैं । अत: हिंदी भाषा ने भारतीय समाज में शिक्षा का विस्तारीकरण और उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को दक्ष बनाने में अपना अनुपम योगदान दिया है ।

2. **व्यवसायिक विकास में हिंदी की भूमिका** -:

प्रमुख व्यवसायी घनश्याम दास बिरला ने कहा था - संवाद की सरलता ही व्यवसाय की सफलता का प्रतीक है । अत: संवाद व्यवसाय में बहुत महत्वपूर्ण है । संपूर्ण भारत में हिंदी प्रभावी संवाद का माध्यम बन के उभरी है । इसलिए कई अंतराष्ट्रीय कंपनियां अपना संवाद अपने ग्राहकों के साथ विज्ञापन में हिंदी माध्यम से कर रही है । हिंदी का प्रयोग करके कई कंपनियां पूरे भारत में अपना व्यापार सफलता पूर्वक कर पा रही है अन्यथा बहुभाषी परिवेश में कंपनियों के लिए व्यापार बहुत असहज होता । अत: विज्ञापन से विपणन में हिंदी ने भारत के व्यवसायिक विकास में महत्ववूर्ण योगदान दिया है ।

3. **सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में हिंदी की भूमिका** -:

हिंदी भाषा भारत की सांस्कृतिक और संस्कारों का प्रतीक है । लोगों को संवाद का एक प्रभावी जरिया हिंदी ने उपलब्ध कराया है । हिंदी फिल्म ने अंतराष्ट्रीय स्तर पर भारत के सॉफ्ट पावर (नरम शक्ति) को प्रदर्शित किया है । हिंदी साहित्य ने भारत की सांस्कृतिकता को विश्व के सामने लाया है । कई हिंदी साहित्यकारों की किताबें कितनी ही अंतराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवादित की गई है। हिंदी ने अंतराष्ट्रीय स्तर पर भारत का मान बढ़ाया है ।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी दिवस मनाया जा रहा है । विभिन्न विदेशी विश्व विद्ययालयों में हिंदी पढ़ाया जा रहा है । यह हिंदी के महत्व को दर्शाता है ।

4. **प्रशासनिक विकास की राह में हिंदी की भूमिका**-:

हिंदी भारतीय जनमानस की भाषा है । पंचायतों से संसद तक सरकारी कार्यालयों के आदेश हिंदी में निकलने के कारण जनता की समझ में आते हैं और प्रशासन का काम प्रभावी होता है । इससे देश में स्थिरता आती है, यह कहा जा सकता है कि हिंदी वह मशाल है जो विकास के पथ से समस्याओं और चुनौतियों के अंधकार को हटा कर आलोकित करती है ।

मुख्य डिजाइन सहायक
प्रधान मुख्य इंजीनियर कार्यालय, मध्य रेल

(राजभाषा पखवाड़े के दौरान प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध)

कविता

नदियों का दर्द

- **कमलेश कुमार द्विवेदी**

नदियां बहुत उदास हैं ,
जो लहराती बलखाती,
कल-कल बहती रहती थी
अब रूकती चलती श्वांस हैं ।
नदियां बहुत उदास हैं । -1

पक्षी कलरव कर उड़ते थे
प्यासे पशु जल पी जीते थे
अब इनके तट पर जहरीले
मानव दानव का वास है।
नदियां बहुत उदास हैं । -2

निर्मल शीतल अमृत-सा जल
बहता उनमें मानस का मल
पीकर भर जाते पशु-पक्षी
हम देते कितने संत्रास हैं ।
नदियां बहुत उदास हैं । -3

नदियां नदी नहीं श्रृंगार हैं
सभ्यता संस्कृति संस्कार हैं
भारत के रग-रग में बहनेवाली
अब घायल दु:खी निराश हैं
नदियां बहुत उदास हैं ।-4

गर नदियां मर जायेगी
हमें तारते तर जायेगी
तब रेत अंजुली में भरकर
सोचेगें क्या इतिहास है,
नदियां बहुत उदास हैं । -5

आओ खोया वैभव लौटायें
निर्मल कल-कल शुद्ध बनाएं
मनुष्य हैं हम, मनुष्यता की
हम सब से इनकी आस है ।
नदियां बहुत उदास हैं ।
नदियां बहुत उदास हैं ।

संरक्षा सलाहकार/यातायात
प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी कार्यालय, मध्य रेल
(राजभाषा पखवाड़े के दौरान प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)

सुलेखन

- डॉ. प्रवीण चोपडा

सुलेखन

सुलेखन, जिसे सुंदर लेखन की कला भी कहा जाता है, एक प्राचीन और महत्वपूर्ण कला रूप है। यह केवल अक्षरों को सुंदर तरीके से लिखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक रचनात्मक और आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। सुलेखन का इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन काल में जब प्रिंटिंग तकनीक विकसित नहीं हुई थी, तब पुस्तकों को हाथ से लिखा जाता था। ये लिखावट न केवल सूचनाओं का संचार करती थी, बल्कि सौंदर्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होती थी। अरबी सुलेखन को इस्लामी कला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। इसी प्रकार चीनी और जापानी लिपियों में भी सुलेखन को विशेष महत्व दिया जाता है।

सुलेखन की शुरुआत प्राचीन सभ्यताओं में हुई, जहां इसे धार्मिक और ऐतिहासिक दस्तावेजों को सजाने के लिए प्रयोग किया जाता था। चीन, जापान, अरब और भारत जैसे विभिन्न देशों में सुलेखन की अपनी अनूठी परंपराएं और शैलियां विकसित हुई हैं।

सुलेखन न केवल लिखावट को सुंदर बनाता है, बल्कि यह लेखक के

Regular

Signature → 2....

bestfriend
Date 26.9.24
Page 2

धैर्य, सृजनात्मकता और कौशल को भी दर्शाता है। इसमें एकाग्रता और स्थिरता की आवश्यकता होती है, जो इसे ध्यान और मन की शांति प्राप्त करने का एक साधन बनाता है। सुंदर और सुव्यवस्थित लिखावट हमेशा से ही एक प्रभावशाली गुण माना गया है। इससे न केवल लेखन सामग्री को पठनीय और आकर्षक बनाया जा सकता है, बल्कि यह एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को भी प्रतिबिंबित करता है।

सुलेखन की कई शैलियां होती हैं, जैसे कि देवनागरी, अरबी, रोमन, और चीन की पारंपरिक शैली। हर शैली की अपनी विशेषताएं और तकनीकें होती हैं जो उसे विशिष्ट बनाती हैं। उदाहरण के लिए, अरबी सुलेखन में विशेष प्रकार के घुमावदार और लहरदार अक्षरों का प्रयोग होता है, जबकि चीन की शैली में ब्रश का उपयोग करते हुए अक्षरों को चित्रात्मक रूप में लिखा जाता है।

आज के डिजिटल युग में भी सुलेखन की प्रासंगिकता बनी हुई है। लोग इसे एक कला के रूप में अपनाते हैं, और कई डिजाइनर व कलाकार इसे अपनी रचनाओं में इस्तेमाल करते हैं। तकनीकी प्रगति ने सुलेखन को नए आयाम दिए हैं, जहां डिजिटल उपकरणों के माध्यम से इसे और भी रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया जा

Regular

Signature → 3.

bestfriend°
Date 3
Page 26.9.24

सकता है। सुलेखन न केवल कला प्रेमियों के बीच लोकप्रिय है, बल्कि इसे शैक्षिक संस्थानों में भी पढ़ाया जाता है।

इसके अलावा, सुलेखन का उपयोग निमंत्रण-पत्रों, प्रमाणपत्रों, लोगो डिज़ाइन और कला प्रदर्शनी में व्यापक रूप से किया जाता है। यह कला रूप न केवल दृश्य सौंदर्य प्रदान करता है, बल्कि इसकी प्रक्रिया में शामिल अनुशासन और धैर्य लेखक को मानसिक शांति और संतोष भी प्रदान करता है।

सुलेखन हमें सिखाता है कि लेखन केवल सूचनाओं को प्रसारित करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक कला है जो हमारी संस्कृति, परंपरा, और रचनात्मकता को व्यक्त करती है। जब आप किसी सुलेखित शब्द को देखते हैं तो आप उस शब्द के साथ अर्थ के साथ-साथ उसकी सुंदरता का भी आनंद लेते हैं।

अंततः सुलेखन एक कला है जो समय के साथ और भी निखरती जा रही है। सुलेखन की यह कला सदियों से चली आ रही है और भविष्य में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए रखेगी॥

Regular

Signature ....

मुख्य दंत चिकित्सक
मध्य रेल अस्पताल, भायखला
(राजभाषा पखवाड़े के दौरान प्रथम पुरस्कार प्राप्त सुलेखन)

लघुकथा

जब नन्हें शिशु की सांसें थम गई

डॉ. प्रवीण चोपडा

रेल यात्रा से जुड़ा संस्मरण

जब नन्हे शिशु की सांसें थम गईं...

वैसे तो प्रत्येक रेल यात्रा के दौरान कोई न कोई विविध संस्मरण जुड़ा होता है लेकिन कुछ संस्मरण ऐसे होते हैं जो उम्रभर याद रहते हैं। ऐसा ही एक संस्मरण 5 साल पुरानी मेरी एक रेल यात्रा से जुड़ा हुआ है।

उस दिन मैं रेलगाड़ी से रात के समय द्वितीय वातानुकूलित सवारी डिब्बे में लखनऊ से दिल्ली जा रहा था। लखनऊ के चार बाग स्थित स्टेशन से गाड़ी रात 11:30 बजे छूटी। ठंडी कड़ाके की पड़ रही थी।

जैसे से गाड़ी स्टेशन से छूट कर थोड़ा आगे बढ़ी, पास के ही एक केबिन से एक छोटे शिशु के रोने की आवाज़ थोड़े थोड़े समय के बाद आ रही थी। लेकिन उस डिब्बे में बैठे लोगों ने इस का कुछ विशेष संज्ञान न लिया, यह सोच कर कि छोटे बच्चे तो यह सब करते ही हैं।

रात में कुछ शोर-शराबा हुआ। एक महिला की आवाज़ आ रही थी कि मुझे तो मेरा बच्चा चाहिए बस, मुझे तो मेरा बच्चा चाहिए बस। अब उस शिशु के रोने की आवाज़ तो बिल्कुल नहीं आ रही थी लेकिन उस महिला के रुदन-क्रंदन की छटपटाहट सुनाई दे रही थी और किसी को कह रही थी कि तुम्हारी लापरवाही की वजह से यह सब हुआ। किसी अनहोनी की कल्पना से ही मेरा मन कांप उठा।

उस शिशु को सांस की कुछ तकलीफ़ थी। लखनऊ के किसी अस्पताल द्वारा उसे दिल्ली के किसी बड़े अस्पताल में रेफर किया गया था। बच्चे को ऑक्सीजन लगी हुई थी और इस के अलावा एक ऑक्सीजन का सिलेंडर भी रखवा दिया गया था, साथ में दो मेडीकल कर्मी भी चल रहे थे। परिवार की बदकिस्मती यह रही कि उस सिलेंडर को खोलने की चाबी

व मेडिकल कमी लाना भूल गए।

जैसे ही पहले वाला ऑक्सीजन का सिलेंडर समाप्त हुआ और नया सिलेंडर लगाने की बात हुई तो यह जानलेवा भूल सामने आ गई। रेलगाड़ी में जो रेल स्टॉक रहता है उस ने भी जुगाड़बाज़ी से अपने औज़ारों की मदद से उस सिलेंडर को खोलने की कोशिश की लेकिन ऑक्सीजन का सिलेंडर खोलने के लिए कोई जुगाड़ काम नहीं आता, बस उस की चाबी ही काम करती है।

मां तो बार बार यही कहती रही कि आप लोग ऐसे कैसे यहां से वहां इलाज के लिए भेज देते हो, अगर शिशु की हालत अच्छी नहीं तो ॥ यह तो एक दुखियारी, अभागिन मां के दिल से निकल रहा दुःख था॥

दूसरा सिलेंडर तो खुला नहीं और ऑक्सीजन उपलब्ध न होने से जब उस शिशु की सांसें उखड़ने लगीं और वह छटपटाने लगा तो बदहवास मां ने गाड़ी की चेन खींच दी। उस को यह उम्मीद थी कि जहां भी गाड़ी रुकेगी, वहीं ही किसी पास के अस्पताल से शिशु का उपचार करवा लेंगे।

लोग यह भी बात कर तो रहे थे कि अभी 20-25 मिंट में मुरादाबाद आ जाएगा। लेकिन उस परिवार की बदकिस्मती समाप्त होने का नाम नहीं ले रही थी। चेन खींचने के बाद गाड़ी एक पुल पर जा रुकी। वह ऐसी जगह थी कि उन लोगों का नीचे उतरना तो दूर की बात थी। गाड़ी भी वहां काफ़ी समय तक रुकी रही। जब रेलगाड़ी इस तरह से चेन-पुलिंग की वजह से रुकती है तो ट्रेन के गार्ड को उस डिब्बे तक आकर कुछ लीवर सैट करना होता है, उस के बाद

ही गाड़ी आगे चलती है। बहरहाल, कुछ समय के बाद कुछ रेलकर्मी आए, लीवर को ठीक ठाक किया और तब गाड़ी आगे चल पड़ी।

कुछ ही मिनटों के बाद मुरादाबाद आ तो गया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। किसी की इतनी आवाज़ तो आई कि अगरबत्ती तो जलवा दो। जिसने भी यह कहा, कोई बेवकूफ़ ही होगा, वे अभागे मां बाप तो बच्चे का इलाज करवाने जा रहे थे ना कि ......!!

थोड़े थोड़े समय के बाद आवाज़ें आनी बिल्कुल बंद हो गईं। रो-रो के वह अभागिन मां भी थक हार के सो गई होगी। घने कोहरे की वजह से गाड़ी लेट चल रही थी — तीन घंटे देरी से गाड़ी नई दिल्ली स्टेशन पर पहुंची।

नई दिल्ली स्टेशन पर कोई शख्स उन्हें लेने आया हुआ था। वह बुजुर्ग महिला उस शिशु की दादी लग रही थी जिसने अपनी शाल में अपने छोटू को लपेट रखा था, गुमसुम सी उस दादी को इस हालत में देख कर हमारे भी आंसू न थम पाए।

शिशु की मां नींद से उठने के बाद फिर रोने लगीं। शोकग्रस्त पति खुद रोते हुए उसे भी संभालने की कोशिश कर रहा था। प्लेटफार्म पर उस परिवार को जाते देख कर मन बहुत दुःखी हुआ — बेहद अफ़सोस हुआ.... ईश्वर उस शिशु की आत्मा को शांति प्रदान करे... जो खिलने से पहले ही डाली से टूट कर मिट्टी में मिल गया ..।

इतने वर्षों के बाद भी जब उस घटना की याद आती है तो दिल दहल जाता है, आंखें नम हो जाती हैं!!

मैं भी तू भी यात्री
चलती रुकती रेल
अपने अपने गांव तक
सब का सब से मेल

मुख्य दंत चिकित्सक
मध्य रेल अस्पताल, भायखला

(राजभाषा पखवाड़े के दौरान प्रथम पुरस्कार प्राप्त लघुकथा)

संपर्क राजभाषा अधिकारियों की अद्यतन सूची (मुख्यालय)

क्र. सं.	विभाग	अधिकारी का नाम (सर्वश्री)	पदनाम	फोन नं / मो. नं.
1.	इंजीनियरी	संजय त्यागी	उप मुख्य इंजीनियर (योजना)	8828110215
2.	निर्माण	श्री एस.के. चौधरी	उप मुख्य इंजीनियर (कार्य)	8828119253
3.	भंडार	कुलदीप कुमार मीना	वरिष्ठ सामग्री प्रबंधक	8828110786
4.	कार्मिक	अभिषेक	उप मुख्य कार्मिक अधिकारी (मानव संसाधन विकास)	54067 8828110624
5.	महाप्रबंधक	कुश किशोर मिश्र	उप महाप्रबंधक	54008 88281100004
6.	चिकित्सा	डॉ. एस कनकराय	मुख्य स्वास्थ्य निदेशक	8828110501
7.	सिगनल	विचाराधीन		
8.	वाणिज्य	कुश किशोर मिश्र	उप मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक	7633935656
9.	लेखा	तेजस्वनी मंगलोर	उप मुख्य वित्त सलाहकार एवं मु.ले.अधिकारी आंतरिक/जांच	
10.	बिजली	जे पलाटा	उप मुख्य बिजली इंजीनियर (ईएम)	54901
11.	सुरक्षा	यश मिश्रा	कर्मचारी वृंद अधिकारी (सुरक्षा)	8828110706
12.	यांत्रिक	नमन कुमार	उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (फ्रेट/ कारखाना)	54157 8828110411
13.	परिचालन	लाल कुमार के.	उप मुख्य परिचालन प्रबन्धक (मुख्यालय)	54224 8828110910
14.	संरक्षा	जे.डी. वाणी	उप मुख्य संरक्षा अधिकारी (यातायात)	55593 8828110731

संपर्क राजभाषा अधिकारियों की अद्यतन सूची (मंडल/कारखाना/संस्थान)

क्र.	मंडल / कारखाना/ संस्थान का नाम	संपर्क राजभाषा अधिकारी का नाम सर्वश्री	पदनाम
1.	मुंबई मंडल	विपिन कुमार	मुख्य कार्मिक अधिकारी
2.	भुसावल मंडल	डॉ.शंकरसिंह परिहार (अति.प्रभार)	राजभाषा अधिकारी
3.	नागपुर मंडल	डॉ.शंकरसिंह परिहार	राजभाषा अधिकारी
4.	पुणे मंडल	श्री जे.एस. मीणा	सहायक कार्मिक अधिकारी (कल्याण)
5.	सोलापुर मंडल	एस.एल. खोत	सहायक कार्मिक अधिकारी
6.	भायखला कारखाना	गोविंद कुमार सिंह	सहायक कार्मिक अधिकारी
7.	परेल कारखाना	सचिन श्रीवास्तव	उप मुख्य सामग्री प्रबंधक एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
8.	माटुंगा कारखाना	ताटी सोनी	उप मुख्य सामग्री प्रबंधक एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
9.	सानपाडा कारखाना	राजेश कुमार मीणा	सहायक कारखाना प्रबंधक
10.	नासिक रोड कारखाना	नरेश कुमार बी. शिंदे	सहायक कार्मिक अधिकारी
11.	मनमाड कारखाना	नरेशकुमार बी. शिंदे	सहायक कार्मिक अधिकारी
12.	पीओएच भुसावल	संजय परदेसी	सहायक कार्मिक अधिकारी
13.	कुर्डुवाडी कारखाना	जितेंद्र के. हराल	उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (कारखाना)
14.	क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, भुसावल	विनय कुमार जोशी	सहायक कार्मिक अधिकारी

संसदीय राजभाषा समिति

माननीय गृह मंत्री जी, अध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 18.09.2024 को उपाध्यक्ष, उप-समितियों के संयोजक एवं इन उप-समितियों में माननीय सदस्यों का नामांकन निम्न प्रकार से किया गया है:

क्र. सं.	पहली उप समिति	दूसरी उप समिति	तीसरी उप समिति
1	**डॉ. दिनेश शर्मा, संयोजक**	**श्री उज्जवल रमण सिंह, संयोजक**	**श्रीयुत श्रीरंग आप्पा चंद्रू बारणे, संयोजक**
2	श्रीमती माला राज्यलक्ष्मी शाह	श्री शंकर लालवानी	श्री सतीश कुमार गौतम
3	श्री रामचन्द्र जांगड़ा	श्री हरिभाई पटेल	श्री ओमप्रकाश भूपालसिंह उर्फ पवन राजेनिंबालकर
4	श्री कल्याण बनर्जी	श्री तंगेला उदय श्रीनिवास	श्री टी.एम. सेल्वागणपति
5	श्री विश्वेश्वर हेगड़े कागेरी	श्री जियाउर्रहमान	श्री ज्योतिर्मय सिंह महतो
6	श्रीमती कृति देवी देववर्मन	डॉ. अनिल सुखदेवराव बॉंडे	श्रीमती धर्मशीला गुप्ता
7	श्री सतपाल ब्रह्मचारी	श्री कुलदीप इंदौरा	श्री ईरण्ण कड़ाड़ी
8	श्री राजेश वर्मा	डॉ. सुमेर सिंह सोलंकी	श्री नीरज डाँगी
9		श्री महाराजा संजाओबा लेशंबा	श्रीमती संगीता यादव

क्र. सं.	आलेख एवं साक्ष्य उप समिति	
1	श्री भर्तृहरि महताब, अध्यक्ष	अध्यक्ष
2	डॉ. दिनेश शर्मा	सदस्य
3	श्री उज्जवल रमण सिंह	सदस्य
4	श्रीयुत श्रीरंग आप्पा चंदू बारणे	सदस्य
5	श्रीमती माला राज्यलक्ष्मी शाह	सदस्य
6	श्री शंकर लालवानी	सदस्य
7	श्री सतीश कुमार गौतम	सदस्य
8	सचिव, राजभाषा विभाग	विशेष आमंत्रित

मराठी खंड

कविता

बापाची दिवाळी !

- अभिजीत बाबुराव रोहेकर

उजाडते पहाटे,
घाई होते निघायची,
आतून येतो आवाज ,
या घरी लवकर जरा बोलायचयं सहज,
दिवसभर कामातून फुरसतचं मिळणार नाही,
आणि संध्याकाळी आल्यावर सुरू होते बाई-
दिवस किती उरलेत,
समजतं कसं नाही,
दिवाळी आली तोंडावर,
नको का करायला घाई ,
पण या वर्षीही बापाची दिवाळी अशीच जाणार नाही !
लगबग सुरू होते दसरा गेल्यावर,
यादी मांडतात सणवाराची वहीवर,
करंजी नी चकल्या ,
रांगोळी नी तोरणं,
फटाके नी मिठाई, दिवे नी कंदील,
छोटीला फ्रॉक नी मोठीला ड्रेस,
मोठ्यांचे मानपान करतांना तोंडाला येतो फेस,
पाहुण्यांची रेलचेल नी नातेवाईकांचे वाण,
मोठाली यादी कधी संपतच नाही,

पण या वर्षीही बापाची दिवाळी अशीच जाणार नाही !

बोनस येतो तारखेला एका नी दुसऱ्या तारखेला दिसतचं नाही

कितीही ठरवा यंदा एक शर्ट घ्यायचा आवडीचा

आणि मारावे हीना अत्तर,

खुशाल मिरवावे,

थोडे खावे, थोडे प्यावे...

करावी जीवाची उधळण होऊन मालामाल !

झुंबड उडते खरेदीची,

नी बाप कापडं घेतचं नाही,

जरी हिशोब मांडतो जमा-खर्चाचा आणि बाकी काही उरतच नाही,

तरी डोळ्यातील कडा तो पाण्याने भिजूनही देत नाही,

पण या वर्षीही बापाची दिवाळी अशीच जाणार नाही !

जेव्हा बघतो चेहेऱ्यावर हसू सगळ्यांच्या,

होतो तो राजा मोठ्या राजवाड्याचा,

वाटतो खिरापत सर्वांना सुखाची

रुखरुख असतेच मनात सततची

अशा बापालाच लक्ष्मी तथास्तु म्हणत असेल,

आणि दिवाळी साजरी करण्याची शक्ती त्याच्यात दिसेल

म्हणूनच या वर्षीही बापाची दिवाळी अशीच जाणार नाही !

या वर्षीही बापाची दिवाळी अशीच जाणार नाही !

अशीच जाणार नाही !

एमसीएम/सीयूजी/दूरसंचार/मुख्यालय
प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार
इंजीनियर कार्यालय, मध्य रेल

मुंबई मंडल पर राजभाषा विषयक गतिविधियां

दिनांक 18/09/2024 को हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 65 अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया ।

दिनांक 26/09/2024 को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन जिसमें 12 कर्मचारियों ने भाग लिया

दिनांक 26/09/2024 को 188वीं मंडल राजभाषा कार्यान्यवन समिति की बैठक का आयोजन एवं राजभाषा पखवाड़ा के प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरण

भुसावल मंडल पर राजभाषा विषयक गतिविधियां

राजभाषा सप्ताह के दौरान दिनांक 16.09.2024 को माननीय रेल मंत्री जी का हिंदी दिवस संदेश का वाचन करते हुए आदरणीय श्रीमती इति पाण्डेय, मंडल रेल प्रबंधक, भुसावल ।

राजभाषा सप्ताह के दौरान दिनांक 16.09.2024 को कर्मचारियों के लिए आयोजित विषय विस्तार प्रतियोगिता में श्री कमलेश कुमार, मंडल यांत्रिक इंजीनियर, भुसावल एवं प्रतियोगिता में भाग लेने वाले मंडल के कर्मचारी।

राजभाषा सप्ताह के दौरान दिनांक 17.09.2024 को कर्मचारियों के लिए आयोजित चित्र बोलता है प्रतियोगिता में श्री बी.आर.जैसवार, सहायक कार्मिक अधिकारी, भुसावल एवं प्रतियोगिता में भाग लेने वाले मंडल के कर्मचारी।

नागपुर मंडल पर राजभाषा विषयक गतिविधियां

राजभाषा पखवाड़ा के दौरान 'चित्र पर आधारित निबंध लेखन' प्रतियोगिता

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह में 'हिंदी कवि सम्मेलन' का आनंद लेते हुए श्रोतागण

वर्धा में आयोजित दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए

डॉ. शंकरसिंह परिहार, राजभाषा अधिकारी, नागपुर

सोलापुर मंडल पर राजभाषा विषयक गतिविधियां

दिनांक 20.08.2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सोलापुर के तत्वावधान में मंडल कार्यालय में हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उप समिति की बैठक का आयोजन किया गया।

दिनांक 19.09.2024 को मंडल कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह एवं मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 98 वीं तिमाही बैठक का आयोजन किया गया एवं मंडल की राजभाषा त्रैमासिक ई-पत्रिका 'संदेश' के अंक – 17 का विमोचन किया गया।

राजभाषा सप्ताह के उपलक्ष्य में मंडल स्तर पर आयोजित हिंदी निबंध, वाक् एवं आलेखन-टिप्पण प्रतियोगिताओं के सफल कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरस्कार वितरित किए गए।

पुणे मंडल पर राजभाषा विषयक गतिविधियां

राजभाषा पखवाड़ा – 2024 के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का एक दृश्य।

दिनांक 24.09.2024 को आयोजित तकनीकी संगोष्ठी में ऑनलाइन व्याख्यान देते हुए सी-डैक, पुणे के संयुक्त निदेशक डॉ. शशिपाल सिंह।

दि. 31.07.2024 को मुंशी प्रेमचंद जयतीं में अतिथि व्याख्याता डॉ. दामोदर खडसे, मती इन्दू दुबे, मंडल रेल प्रबंधक, श्री बृजेश कुमार सिंह, अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी तथा समस्त शाखा अधिकारी।

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम ।

मुख्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 16.09.2024 से 30.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान कुल 06 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनके परिणाम निम्नानुसार हैं :-

1. हिंदी निबंध प्रतियोगिता

क्र.	प्रतिभागी का नाम (सर्वश्री)	पदनाम	कार्यालय/विभाग	प्रतियोगिता में स्थान
1	राम मूर्ति	मुख्य डिजा. सहा.	इंजीनियरी	प्रथम
2	कंचन राजपूत	कनिष्ठ आशुलिपिक	इंजीनियरी	द्वितीय
3	आनंद कुमार केवट	वरिष्ठ कार्य अ. नि.	महाप्रबंधक कार्या.	तृतीय
4	प्रिंस कुमार	कनिष्ठ लेखा सहा.	लेखा	प्रेरणा I
5	शेर सिंह मीना	वरि. इंजी. (दू.सं.)	सिग. एवं दू. सं.	प्रेरणा II
6	भजन सिंघ	वरि. अनु. अधि.	यातायात लेखा	प्रेरणा III

2. हिंदी टिप्पण एवं प्ररूप लेखन प्रतियोगिता

क्र.	प्रतिभागी का नाम (सर्वश्री)	पदनाम	कार्यालय/विभाग	प्रतियोगिता में स्थान
1	सतीश कुमार	सीनि.से.इंजी. (डी.डी.)	इंजीनियरी	प्रथम
2	आनंद कुमार केवट	वरि. कार्य अध्ययन निरी	महा. कार्या.	द्वितीय
3	विनोद कुमार गौतम	मुख्य लोको निरीक्षक	परिचालन	तृतीय
4	विमी घनेलू	मुख्य कार्या. अधीक्षक	वाणिज्य	प्रेरणा I
5	कृपा शंकर यादव	वरि. चल लेखा निरीक्षक	यातायात लेखा	प्रेरणा II
6	गुन्जन कुमार झा	सी. से. इंजी.	इंजीनियरी	प्रेरणा III

3. हिंदी वाक् प्रतियोगिता

क्र.	प्रतिभागी का नाम (सर्वश्री)	पदनाम	कार्यालय/विभाग	प्रतियोगिता में स्थान
1	गुंजन कुमार झा	सीनि. से. इंजी.	इंजीनियरी	प्रथम
2	विमल कुमार	वरिष्ठ लेखा अधि.	यातायात लेखा	द्वितीय
3	धीरेंद्र कुमार पटौरिया	सीनि. से. इंजी.	यातायात लेखा	तृतीय
4	भजन सिंघ	वरि. अनु. अधि.	यातायात लेखा	प्रेरणा I
5	मनोज गावंडे	कनिष्ठ लिपिक	बिजली	प्रेरणा II
6	कृपा शंकर यादव	वरि. चल लेखा निरी.	यातायात लेखा	प्रेरणा III

4. स्वरचित हिंदी कविता लेखन प्रतियोगिता

क्र.	प्रतिभागी का नाम (सर्वश्री)	पदनाम	कार्यालय/विभाग	प्रतियोगिता में स्थान
1	कमलेश कुमार द्विवेदी	संरक्षा सलाहकार/या.	संरक्षा	प्रथम
2	भजन सिंघ	वरि. अनु. अधि.	यातायात लेखा	द्वितीय
3	अजय कुमार	कनि. इंजी. (दू.सं.)	सिग. एवं दू. सं.	द्वितीय
4	अवधेश कोष्टा	वरि. लिपिक	इंजीनियरी	तृतीय
5	विजय कालुराम भोईर	कार्यालय अधीक्षक	इंजीनियरी	तृतीय
6	आनंद कुमार केवट	वरिष्ठ कार्य अ. नि.	महाप्रबंधक कार्या.	प्रेरणा I

5. हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता

क्र.	प्रतिभागी का नाम (सर्वश्री)	पदनाम	कार्यालय/विभाग	प्रतियोगिता में स्थान
1	डॉ. प्रवीण चोपड़ा	मुख्य दंत चिकि.	मध्य रेल अस्प., भाय.	प्रथम
2	रोहित यादव ठवरे	उ. मु. इंजी. (पुल)-I	इंजीनियरी	द्वितीय
3	ज्वाला प्रसाद	स. परि. प्रबं. (माल)	परिचालन	तृतीय
4	डॉ. स्वप्निल धनराज निला	मु. जन. अधि.	जनसंपर्क	प्रेरणा I
5	जितेंद्र देविदास वाणी	उ. मु.सं. अधि. (या.)	संरक्षा	प्रेरणा II
6	नमन कुमार	उ.मु.यां.इं.,का.एवं माल.	यांत्रिक	प्रेरणा III

6. हिंदी लघुकथा लेखन प्रतियोगिता

क्र.	प्रतिभागी का नाम (सर्वश्री)	पदनाम	कार्या./विभाग	प्रतियोगिता में स्थान
1	डॉ. प्रवीण चोपड़ा	मुख्य दंत चिकित्सक	मध्य रेल अस्प., भाय.	प्रथम
2	मृत्युंजय कुमार	स. वित्त सलाहकार	लेखा	द्वितीय
3	जितेंद्र यादव	स. वाणि. प्र. (सा.)	वाणिज्य	तृतीय
4	लिनेट रसकीना	स. वि.ले.अधि. (भ.नि.)	लेखा	प्रेरणा I
5	अशोक कुमार मौर्य	वरि. सहा. वि. सला.	लेखा	प्रेरणा II
6	प्रेम कुमार शर्मा	स.का.अधि. (वि./सं व दू)/मु.	कार्मिक	प्रेरणा III

जन्म	3 दिसंबर, 1903
निधन	26 दिसंबर, 1976
पेशा	उपन्यासकार, कहानीकार
विधा	कहानी और उपन्यास
विषय	प्रगतिशील साहित्य
प्रसिद्ध रचना	झूठा सच, दिव्या

प्रमुख प्रकाशित रचनाएं

उपन्यास

- दादा कामरेड, 1941
- देशद्रोही, 1943
- दिव्या, 1945
- पार्टी कामरेड, 1946
- मनुष्य के रूप, 1949
- अमिता, 1956
- झूठा सच भाग–1(1958), भाग–2 (1960)
- बारह घंटे, 1962
- अप्सरा का शाप, 1965
- क्यों फंसे, 1968
- तेरी मेरी उसकी बात, 1974

कहानी संग्रह

- पिंजरे की उड़ान, 1939
- फूलो का कुर्ता, 1949
- धर्मयुद्ध, 1950
- सच बोलने की भूल, 1962
- भस्मावृत चिंगारी, 1946
- उत्तनी की मां, 1955
- चित्र का शीर्षक, 1951
- तुमने क्यों कहा था मै सुंदर हूं, 1954
- खच्चर और आदमी, 1965
- भूख के तीन दिन,1968
- उत्तराधिकारी, 1951
- अभिशिप्त, 1943

व्यंग्य संग्रह

- चक्कर क्लब,
- कुत्ते की पूंछ

रवींद्रनाथ
ऑपरेशन
खुकरी